BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

# जीएसटी दर में कटौती: उत्तर प्रदेश में आजीविका और विकास को सशक्त बनाना

02 अक्टूबर 2025

## प्रमुख बिंदु

- भदोही कालीन, मुरादाबाद के पीतल के बर्तन और सहारनपुर के काष्ठकला उत्पाद 6-7% सस्ते होंगे, जिससे निर्यात को बढ़ावा मिलेगा और लाखों कारीगरों के रोज़गार को बढ़ावा मिलेगा।
- कानपुर-आगरा चमड़ा और फुटवियर क्लस्टर, जिनमें 15 लाख कर्मचारी कार्यरत हैं, जीएसटी कटौती से लाभान्वित होंगे, जिससे एमएसएमई की प्रतिस्पर्धात्मकता और निर्यात में सुधार होगा।
- फ़िरोज़ाबाद के कांच के बर्तन, खुर्जा के सिरेमिक और गोरखपुर के टेराकोटा की लागत कम होगी, जिससे कमज़ोर क्लस्टरों और त्यौहार के समय में माँग को बढ़ावा मिलेगा।
- सीमेंट, फुटवियर और खेल के सामान के क्लस्टर घरों और बुनियादी ढाँचे के लिए अधिक किफायती बनेंगे, जिससे औद्योगिक विकास को बल मिलेगा।

## परिचय

उत्तर प्रदेश भारत के कुछ सबसे प्रतिष्ठित **शिल्प और औद्योगिक समूहों का घर है। भदोही के कालीनों और मुरादाबाद के पीतल के बर्तनों** से लेकर **कानपुर के चमड़े, फिरोज़ाबाद के कांच के बर्तनों और मेरठ के खेल के सामान** तक, राज्य की अर्थव्यवस्था शिल्प विरासत और बड़े पैमाने के उद्योग का मिश्रण है। **लखनऊ की चिकनकारी, वाराणसी की ज़रदोज़ी, सहारनपुर की लकड़ी की कारीगरी और गोरखपुर की टेराकोटा** जैसे पारंपरिक शिल्प विश्व स्तर पर पहचाने जाते हैं, जबकि **आगरा का पेठा और खुर्जा का सिरेमिक** जैसे उत्पाद अपनी विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान रखते हैं।

हाल ही में **जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने से हस्तशिल्प, खाद्य उत्पाद, जूते, खिलौने, वस्त्र और औद्योगिक वस्तुओं** सहित इन मूल्य श्रृंखलाओं में राहत मिलेगी । कर का बोझ कम करके, इन सुधारों से **उपभोक्ताओं के लिए लागत कम होने, कारीगरों और एमएसएमई के मार्जिन में सुधार होने** और उत्तर प्रदेश के निर्यात समूहों को और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने की उम्मीद है।

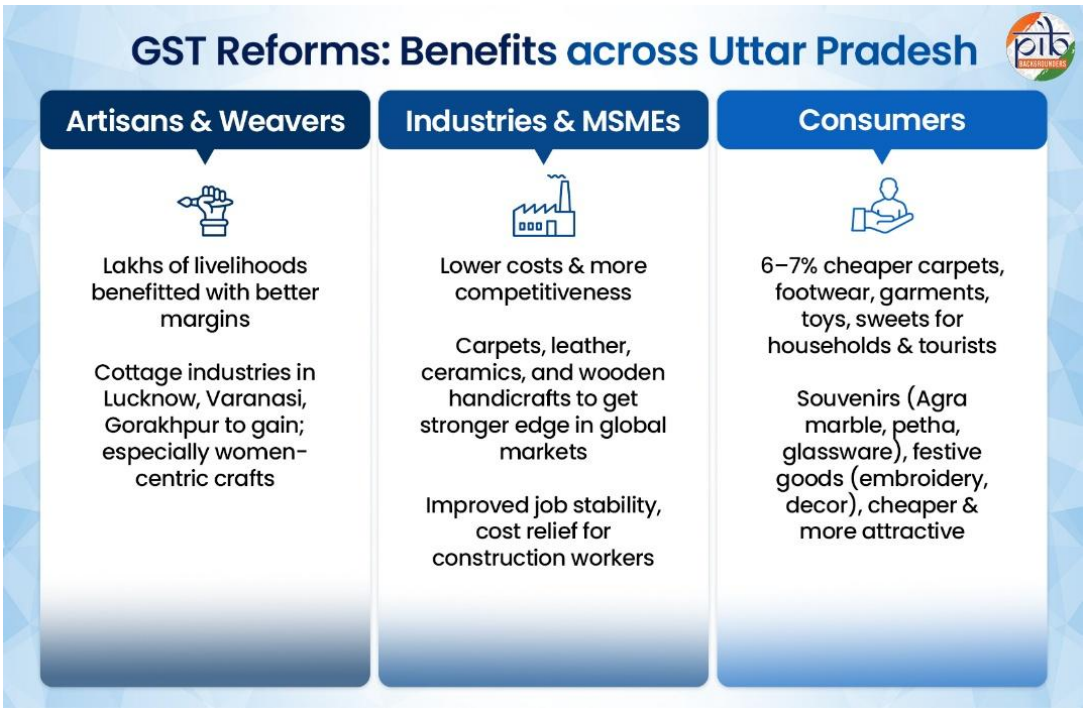


## कालीन और गलीचे

भदोही **-मिर्जापुर-जौनपुर क्षेत्र** भारत के सबसे बड़े **हस्त-बुने हुए कालीन समूहों में से एक है** । भदोही (संत रविदास नगर) को एक ज़िला-एक-उत्पाद (ओडीओपी) प्रमुख समूह और देश के सबसे बड़े कालीन-निर्यात केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस समूह में **1,00,000 से ज़्यादा करघे हैं** , जिनमें अकेले भदोही में लगभग **63,000 कारीगर कार्यरत हैं, और बुनाई, रंगाई, परिष्करण और रसद के माध्यम से 80,000-1.4 लाख लोगों की आजीविका** चलती है । भदोही का हस्तनिर्मित **कालीन जीआई-पंजीकृत है**।

**जीएसटी दर 12% से घटाकर 5% करने** के बाद, हस्तनिर्मित कालीन **6-7% सस्ते होने की उम्मीद है**। इससे घरेलू बाज़ारों में सामर्थ्य में सुधार, निर्यात प्रतिस्पर्धा में मजबूती और क्लस्टर पर हावी पारिवारिक करघों और लघु एवं मध्यम उद्यमों (एसएमई) के लिए कार्यशील पूंजी का दबाव कम होने की संभावना है।

## पत्थर और संगमरमर हस्तशिल्प

आगरा, फिरोज़ाबाद और मथुरा के कारीगर परिवारों द्वारा आगे बढ़ाया जाने वाला **आगरा का प्रसिद्ध संगमरमर जड़ाऊ शिल्प (परचिनकारी) पर्यटन से जुड़ा हुआ है। यह समूह 5,000-20,000 कामगारों को**

**रोजगार देता है**, जिनमें नक्काशी करने वाले, पॉलिश करने वाले और जड़ाऊ कलाकार शामिल हैं, जिनमें से कई को ओडीओपी पहल के तहत सहायता प्रदान की जाती है।

यह क्षेत्र पर्यटन और सजावट बाज़ारों से गहराई से जुड़ा हुआ है, जिसमें ऑनलाइन उपहारों के ज़रिए अतिरिक्त बिक्री और **यूरोप व खाड़ी देशों को सीमित निर्यात शामिल हैं । आगरा पर्चिनकारी के लिए जीआई आवेदन की कार्र्वाई चल रही है, और ताजमहल की विरासत** से जुड़े होने के कारण इस शिल्प को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है ।

जीएसटी **दर को 12% से घटाकर 5% करने** से पत्थर हस्तशिल्प पर्यटकों और घरेलू खरीदारों के लिए अधिक किफायती हो जाएगा, जिससे बिक्री बढ़ेगी और छोटी कार्यशालाओं पर लागत का दबाव कम होगा।

## पीतल के बर्तन और धातु हस्तशिल्प

**रामपुर और फर्रुखाबाद** के साथ-साथ **मुरादाबाद के पीतल के बर्तनों के क्लस्टर में एमएसएमई और परिवार द्वारा संचालित कार्यशालाओं का प्रभुत्व** है। यह क्लस्टर **मुरादाबाद में लगभग 20,000-60,000 कारीगरों को सीधे तौर पर रोजगार देता है**, और कई अन्य पॉलिशिंग, पैकेजिंग और लॉजिस्टिक्स में लगे हुए हैं। मुरादाबाद मेटल क्राफ्ट **जीआई-पंजीकृत है**, और यह शहर **भारत के सबसे बड़े हस्तशिल्प निर्यात केंद्रों में से एक है** ।

को **12% से घटाकर 5% करने से पीतल के बर्तन लगभग 6% सस्ते** होने की उम्मीद है , जिससे त्यौहारी मांग बढ़ेगी, निर्यात प्रतिस्पर्धा में सुधार होगा, तथा कारीगरों की नौकरियों को स्थिर करते हुए एमएसएमई लाभप्रदता को समर्थन मिलेगा।

## चमड़े के सामान और सहायक उपकरण

उत्तर प्रदेश का चमड़ा क्षेत्र बड़े निर्यातकों, छोटी चमड़ा फैक्ट्रियों और एमएसएमई को जोड़ता है। राज्य सरकार के अनुसार, **यह उद्योग 15 लाख से ज़्यादा लोगों को रोज़गार देता है** , और अकेले कानपुर में ही लगभग 200 चमड़ा फैक्ट्रियाँ हैं। **कानपुर सैडलरी और आगरा लेदर फुटवियर, दोनों ही जीआई-पंजीकृत हैं** और अपने ज़िलों के लिए ओडीओपी के प्रमुख उत्पादों के रूप में मान्यता प्राप्त हैं।

₹2,500 तक की कीमत वाले चमड़े के सामान और जूतों पर जीएसटी दर 12% से घटाकर 5% करने से खुदरा कीमतों में कमी आने की उम्मीद है। इससे एमएसएमई की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होगा, प्रभावी कर बोझ कम करके निर्यात मार्जिन में वृद्धि होगी, और कानपुर, आगरा और उन्नाव में छोटी चमड़ा इकाइयों के औपचारिकीकरण को प्रोत्साहन **मिलेगा ।**

## चिकनकारी और ज़री कढ़ाई

उत्तर प्रदेश के कढ़ाई क्षेत्र में कुटीर और परिवार-संचालित इकाइयाँ प्रमुख हैं, जिनमें **लखनऊ, वाराणसी और बरेली** (निफ्ट और एमएसएमई रिपोर्ट) में लगभग 2.5-3 लाख कारीगर कार्यरत हैं। महिलाएँ, विशेष रूप से अर्ध-शहरी और ग्रामीण परिवारों में, कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा हैं। **लखनऊ चिकन क्राफ्ट और वाराणसी ज़रदोज़ी वर्क, दोनों ही जीआई-पंजीकृत** और मान्यता प्राप्त ओडीओपी उत्पाद हैं, जिन्हें विशेष प्रचार सहायता प्राप्त है।

**जीएसटी 12% से घटाकर 5% करने से** कढ़ाई वाले कपड़े **6-7% सस्ते होने की उम्मीद है** । इससे कारीगरों को मशीन-निर्मित विकल्पों से प्रतिस्पर्धा करने और शादी, त्योहारों और निर्यात के ऑर्डर से घरेलू आय बढ़ाने में मदद मिलेगी।

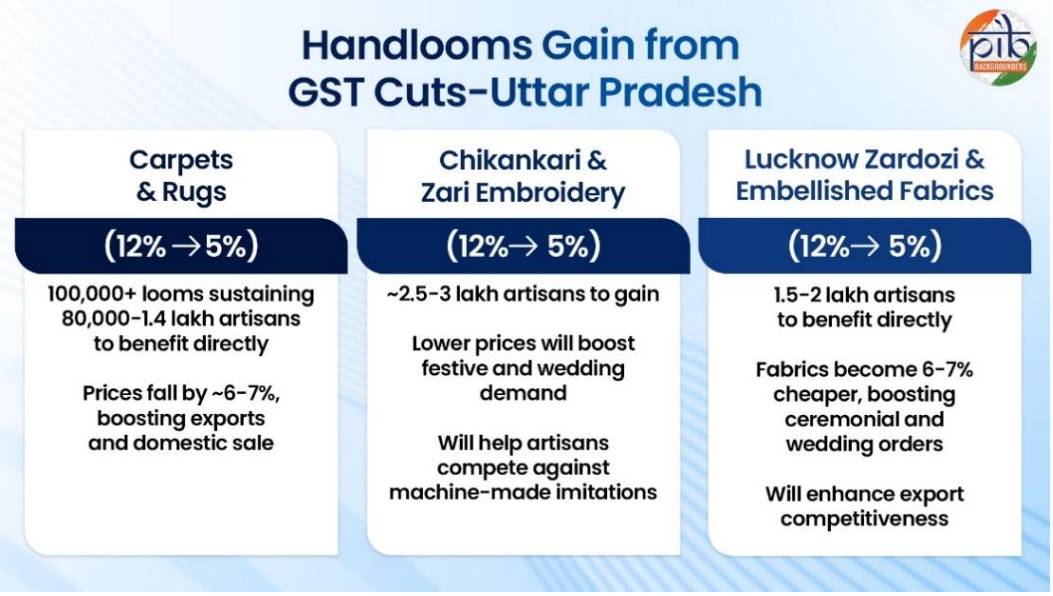


## कांच के बर्तन और चूड़ियाँ

**"भारत की कांच नगरी" के नाम से विख्यात फ़िरोज़ाबाद को** ओडीओपी के तहत बढ़ावा दिया गया है और इसके कांच शिल्प के लिए जीआई टैग भी पंजीकृत है। यह ज़िला लगभग **1.5 लाख श्रमिकों और कारीगरों को रोजगार देता है**, और उत्पादन में छोटे भट्टों और एमएसएमई का प्रमुख योगदान है।

यह क्लस्टर **लगभग 2,000 करोड़ रुपये के घरेलू बाजार को सेवा प्रदान करता है** , जबकि सजावटी कांच के बने पदार्थ और मोतियों का निर्यात **खाड़ी देशों, अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया तक पहुंचता है** ।

**जीएसटी दर अब 12% की बजाय 5%** होने से, कांच के बर्तन और चूड़ियाँ **6-7% सस्ती** होने की उम्मीद है । इससे मूल्य-संवेदनशील घरेलू बाजार में बिक्री बढ़ने, छोटी भट्टियों की व्यवहार्यता में सुधार और कारीगर परिवारों की आय स्थिर होने में मदद मिलने की संभावना है।

## मिट्टी के बर्तन और टेराकोटा

**उत्तर प्रदेश के मिट्टी के बर्तनों के समूहों में गोरखपुर टेराकोटा और निज़ामाबाद ब्लैक पॉटरी (आज़मगढ़) शामिल हैं**, जो दोनों ही जीआई-पंजीकृत ओडीओपी उत्पाद हैं, साथ ही खुर्जा सिरेमिक भी। गोरखपुर और आज़मगढ़ में, इन समूहों में **अनुमानित 10,000-15,000 कारीगर कार्यरत हैं**, जिनमें से कई परिवार-आधारित और मौसमी इकाइयों में कार्यरत हैं।

घरेलू मांग धार्मिक बाजारों, त्यौहारों और सजावटी उपयोग से प्रेरित होती है, तथा **यूरोप और अमेरिका के विशिष्ट खरीदारों को कुछ सीमित निर्यात होता है** ।

दर **12% से घटाकर 5% करने से** मिट्टी के बर्तन और टेराकोटा की वस्तुएँ और भी सस्ती होने की उम्मीद है। इससे त्योहारों के मौसम में बिक्री बढ़ने, प्लास्टिक और धातु के विकल्पों के मुकाबले प्रतिस्पर्धा में सुधार और इन नाज़ुक कारीगर समूहों को बनाए रखने में मदद मिलने की संभावना है।

## पारंपरिक खिलौने

**मेरठ, गोरखपुर, झाँसी और मथुरा** जैसे ज़िलों में तिपहिया साइकिल, स्कूटर, पैडल कार और धार्मिक मूर्तियाँ जैसे मौसमी खिलौने मुख्यतः घरेलू कारीगरों द्वारा बनाए जाते हैं, जिनमें से कई महिलाएँ हैं। लगभग **8,000-10,000 कारीगर इस क्षेत्र पर निर्भर हैं**, जो अक्सर अंशकालिक और मौसमी होते हैं, और जिनकी आय जन्माष्टमी, दिवाली और होली जैसे त्योहारों से जुड़ी होती है।

इस शिल्प को प्रशिक्षण और क्लस्टर-आधारित समर्थन के माध्यम से ओडीओपी के तहत बढ़ावा दिया जाता है, जबकि **गोरखपुर टेराकोटा गुड़िया जीआई-पंजीकृत हैं। जीएसटी को 12% से घटाकर 5% करने से**, पारंपरिक खिलौनों के **6-7% सस्ते होने की उम्मीद है**, जिससे त्योहारों की मांग बढ़ेगी और कारीगरों के परिवारों को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी।

## लकड़ी के खिलौने और शिल्प

उत्तर प्रदेश में लकड़ी के खिलौने और शिल्प क्षेत्र पारिवारिक कारीगरों द्वारा संचालित है, जिनमें से कई अपने घरों से ही काम करते हैं। अकेले वाराणसी और चित्रकूट के क्लस्टर **लगभग 15,000-25,000 कारीगरों को रोजगार देते हैं** , जबकि सहारनपुर में लकड़ी के काम और नक्काशी में लगे हजारों कारीगर रहते हैं। रामपुर भी इस पारंपरिक शिल्प नेटवर्क का हिस्सा है।

वाराणसी वुडन लैकरवेयर और खिलौने तथा सहारनपुर वुड कार्विंग, दोनों ही जीआई-पंजीकृत हैं और ओडीओपी के तहत प्रचारित किए जाते हैं, जहाँ सामान्य सुविधा केंद्र और डिज़ाइन प्रशिक्षण कारीगरों को उत्पादन को आधुनिक बनाने में मदद करते हैं। ये क्लस्टर मेलों, धार्मिक खिलौनों और सजावट के माध्यम से मज़बूत घरेलू माँग को पूरा करते हैं, और यूरोप और खाड़ी देशों तक मामूली निर्यात भी करते हैं।

को **12% से घटाकर 5% करने से** खिलौने और लघु शिल्प सस्ते होने की उम्मीद है, जिससे स्थानीय बाजारों में उनकी सामर्थ्य बढ़ेगी और कारीगरों को मशीन-निर्मित प्लास्टिक उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलेगी।

## हस्तनिर्मित कागज और स्टेशनरी

हस्तनिर्मित कागज़ और पर्यावरण-अनुकूल स्टेशनरी का उत्पादन **सहारनपुर, मेरठ और लखनऊ के विभिन्न समूहों में**, मुख्यतः स्वयं सहायता समूहों, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों और पर्यावरण-उद्यमों के माध्यम से किया जाता है। इस क्षेत्र में लगभग **5,000-6,000 कर्मचारी कार्यरत हैं**, जिनमें कई महिला कारीगर भी शामिल हैं, और इसे खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) की "हरित उत्पाद" पहल के साथ-साथ ODOP के तहत भी बढ़ावा दिया जाता है।

पर्यावरण के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं के कारण घरेलू मांग बढ़ रही है, जबकि हस्तनिर्मित कागज और विवाह संबंधी स्टेशनरी का निर्यात **यूरोपीय संघ, अमेरिका और जापान के बाजारों तक पहुंच रहा है** ।

**जीएसटी को 12% से घटाकर 5% कर दिए जाने** से , इन उत्पादों के मशीन-निर्मित कागज के मुकाबले अधिक प्रतिस्पर्धी बनने, विवाह, स्कूलों और कार्यालयों में व्यापक रूप से पर्यावरण-अनुकूल अपनाने को प्रोत्साहन मिलने तथा ग्रामीण स्वयं सहायता समूहों की आय को मजबूत करने की उम्मीद है।

## आगरा पेठा

**आगरा की प्रसिद्ध मिठाई, पेठा, जीआई-पंजीकृत है** और **इसे** ओडीओपी के प्रमुख उत्पाद के रूप में प्रचारित किया जाता है। **आगरा और फतेहपुर सीकरी में छोटे-छोटे परिवार-संचालित कारखानों में बड़े पैमाने पर उत्पादित, यह** उत्पादन, पैकेजिंग और स्थानीय बिक्री में लगे लगभग **5,000-6,000 श्रमिकों को रोजगार देता है।**

आगरा के पर्यटन, उपहार और त्योहारों के कारण इस मिठाई की घरेलू माँग बहुत ज़्यादा है, जबकि पारंपरिक खाद्य आपूर्तिकर्ताओं के ज़रिए खाड़ी और अमेरिका को इसका निर्यात सीमित है। **जीएसटी दर 12/18% से घटाकर 5% करने से** आगरा पेठा और भी किफ़ायती होने की उम्मीद है, जिससे पर्यटकों की खरीदारी बढ़ेगी, छोटी मिठाई की दुकानों को पैकेज्ड कैंडीज़ के मुक़ाबले प्रतिस्पर्धा में बने रहने में मदद मिलेगी, और कैंडी बनाने वाले परिवारों में रोज़गार की स्थिरता आएगी।

## खेल के सामान

**मेरठ और मोदीनगर** मिलकर भारत के सबसे बड़े खेल सामग्री समूहों में से एक हैं, जहाँ **लगभग 30,000-35,000 कर्मचारी** छोटी इकाइयों, एमएसएमई और बड़े कारखानों में कार्यरत हैं। यह क्षेत्र घरेलू **बाजार के लिए लगभग ₹250 करोड़ मूल्य के क्रिकेट और हॉकी उपकरण बनाता है**, साथ ही **यूके, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व को भी निर्यात करता है** । इसे विपणन और एमएसएमई सहायता के साथ ओडीओपी के तहत सहायता प्रदान की जाती है।

**जीएसटी को 12% से घटाकर 5% करने से** खेल के सामान **5-7% सस्ते** होने की उम्मीद है । इससे घरेलू बाजार में मांग बढ़ने, निर्यात प्रतिस्पर्धा में सुधार और लघु एवं मध्यम उद्यमों में रोजगार स्थिरता को बढ़ावा मिलने की संभावना है।

## जूते

मथुरा की तरह, **आगरा के फुटवियर क्लस्टर में छोटे पारिवारिक वर्कशॉप और एमएसएमई का दबदबा है। यह क्लस्टर प्रतिदिन लगभग 1.5 लाख जोड़ी फुटवियर का उत्पादन करता है और भारत के कुल फुटवियर निर्यात में लगभग 28% का योगदान देता है। यह उत्पादन**, परिष्करण और खुदरा क्षेत्र **में लगभग 10,000-15,000 श्रमिकों को** रोजगार देता है। **आगरा लेदर फुटवियर जीआई-पंजीकृत है और ओडीओपी के तहत प्रचारित किया जाता है** ।

**जीएसटी 12% से घटाकर 5% करने से** खुदरा कीमतों में गिरावट की उम्मीद है। इससे घरेलू सामर्थ्य में सुधार होगा, लघु-स्तरीय कार्यशालाओं और रोज़गार को बढ़ावा मिलेगा, और वैश्विक बाज़ारों में बड़े और सिंथेटिक जूतों के मुकाबले प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी।

## खुर्जा सिरेमिक्स

बुलंदशहर ज़िले का खुर्जा एक प्रमुख सिरेमिक केंद्र है, जहाँ छोटे और मध्यम आकार के परिवार संचालित उद्यमों का बोलबाला है। लगभग **20,000-25,000 कारीगर और श्रमिक** आकार देने, ग्लेज़िंग, फायरिंग, फ़िनिशिंग और पैकेजिंग के काम में लगे हुए हैं। इस शिल्प को ओडीओपी के तहत बढ़ावा दिया जाता है। **जीएसटी 12% से घटाकर 5% करने के साथ** , खुर्जा सिरेमिक **6-7% सस्ता होने की उम्मीद है** । इससे औद्योगिक सिरेमिक के मुकाबले प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ेगी, एसएमई की लाभप्रदता बढ़ेगी, क्लस्टर कायम रहेगा और घरेलू और निर्यात दोनों माँगों को बढ़ावा मिलेगा।

## लखनऊ ज़रदोज़ी और अलंकृत कपड़े

लखनऊ ज़रदोज़ी, एक जीआई-पंजीकृत शिल्प और एक ओडीओपी-प्रवर्तित उत्पाद, लगभग **1.5-2 लाख कारीगरों को आजीविका प्रदान करता है**, जिसमें कुटीर और लघु उद्योगों में महिलाएँ कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा हैं। यह शिल्प शादियों और त्योहारों की मजबूत घरेलू माँग को पूरा करता है, साथ ही **मध्य पूर्व, यूरोप और अमेरिका को निर्यात भी करता है** ।

**जीएसटी को 12% से घटाकर 5% करने से** सजावटी कपड़े अधिक किफायती हो जाएंगे, जिससे त्यौहारों और **शादी-ब्याह के ऑर्डर बढ़ेंगे, कारीगरों का रोजगार मजबूत होगा** और मशीन से बने नकली कपड़ों के मुकाबले प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी।

## लकड़ी के हस्तशिल्प

**सहारनपुर, देहरादून (उत्तर प्रदेश का हिस्सा) के कुछ हिस्सों के साथ, लकड़ी के हस्तशिल्प का एक केंद्र है**, जहाँ परिवार द्वारा संचालित कार्यशालाएँ छोटे पैमाने पर, कौशल-प्रधान नक्काशी का काम करती हैं। यह

क्षेत्र लगभग **50,000-60,000 कारीगरों और श्रमिकों को रोजगार देता है** , जो घरेलू सजावट और उपहार बाज़ारों में सामान पहुँचाते हैं और साथ ही **यूरोप, अमेरिका और मध्य पूर्व को निर्यात भी करते हैं** । सहारनपुर की लकड़ी की नक्काशी जीआई-पंजीकृत है और ओडीओपी के प्रमुख उत्पाद के रूप में मान्यता प्राप्त है।

**जीएसटी को 12% से घटाकर 5% करने** से, घरेलू बाजारों में लकड़ी के हस्तशिल्प अधिक किफायती हो जाने की उम्मीद है, जिससे बिक्री में वृद्धि होगी, कारीगरों को बनाए रखने और कौशल संरक्षण में सहायता मिलेगी, तथा निर्यात प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होगी।

## सीमेंट उद्योग

**मथुरा, चुनार (मिर्जापुर), फिरोजाबाद और अलीगढ़ में फैले उत्तर प्रदेश के सीमेंट उद्योग में** बड़े पैमाने के औद्योगिक संयंत्रों का बोलबाला है। इस क्षेत्र में **लगभग 15,000-20,000 प्रत्यक्ष कर्मचारी** और परिवहन, कच्चे माल की आपूर्ति और निर्माण से जुड़ी सेवाओं में लगभग 10,000 कर्मचारी कार्यरत हैं। ये क्लस्टर चूना पत्थर समृद्ध क्षेत्रों के आसपास स्थित हैं, जो कुशल आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करते हैं। जहाँ घरेलू बाजार आवास, बुनियादी ढाँचे और निर्माण से संचालित होता है, वहीं सीमित क्लिंकर **निर्यात नेपाल और बांग्लादेश को भी जाता है** ।

जीएसटी **दर को 28% से घटाकर 18% करने से** सीमेंट अधिक किफायती हो जाएगा, डेवलपर्स और परिवारों के लिए निर्माण लागत कम हो जाएगी, आयात के मुकाबले प्रतिस्पर्धा में सुधार होगा और औद्योगिक संयंत्रों और रसद सेवाओं के विस्तार को प्रोत्साहन मिलेगा।

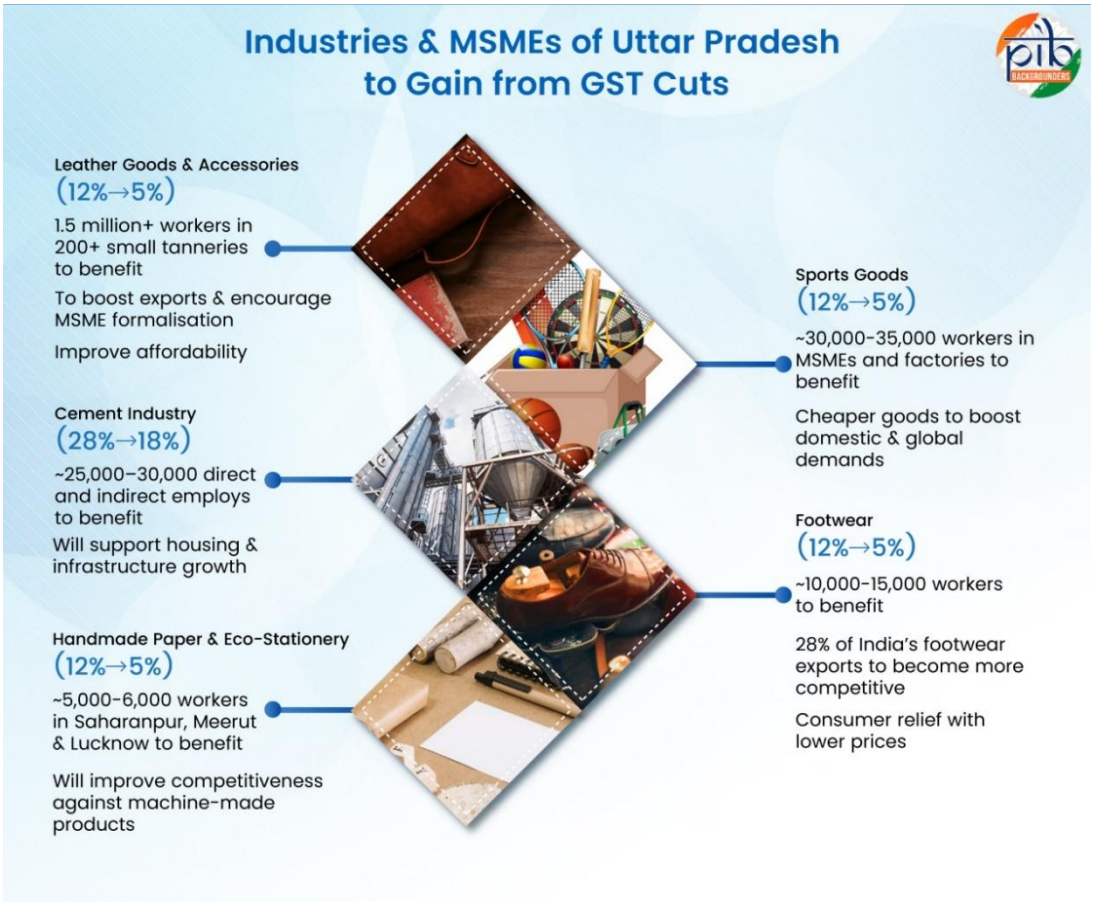


## निष्कर्ष

जीएसटी **सुधार** उत्तर प्रदेश की विविध अर्थव्यवस्था, जिसमें **कालीन, पीतल के बर्तन, ज़रदोज़ी, जूते, चीनी मिट्टी की चीज़ें और सीमेंट शामिल हैं**, को लक्षित राहत प्रदान करते हैं। कम कर दरों से परिवारों की सामर्थ्य में सुधार, कारीगरों पर कार्यशील पूंजी का दबाव कम होने और **घरेलू तथा वैश्विक, दोनों बाज़ारों में एमएसएमई की प्रतिस्पर्धात्मकता मज़बूत होने की उम्मीद है** ।

लाखों आजीविकाओं को बनाए रखते हुए, ओडीओपी और जीआई-मान्यता प्राप्त उत्पादों को समर्थन देकर, और शिल्प और उद्योग दोनों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देकर, **ये सुधार भारत की आर्थिक वृद्धि में एक प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में उत्तर प्रदेश की स्थिति को सुदृढ़ करते हैं । ये परिवर्तन आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत 2047 के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के अनुरूप भी हैं**, जहाँ पारंपरिक कौशल और आधुनिक उद्योग साथ-साथ विकसित होते हैं।

**पीके/केसी/एनकेएस**